2 जनवरी 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 19 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गौरझामर में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गौरझामर-सागर (म.प्र.) : यहाँ शौरीपुर नगरी (संस्कार आई.टी.आई. दाल मिल) में श्री 1008 शान्तिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट एवं सागर-केसली-करेली-गढाकोटा मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनांक 19 दिसम्बर से सोमवार 24 दिसम्बर, 2018 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित निर्मलजी सागर, पण्डित सुबोधजी सिवनी आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुआ।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती कुसुम-महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र श्री अजयकुमारजी जैन गौरझामर, कुबेर इन्द्र श्री संजयजी जैन गौरझामर एवं यज्ञनायक श्री विनोदकुमारजी जैन गौरझामर थे। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री सेठ सुखदयालजी राजेशजी जिनेशजी दिनेशजी डेवडिया परिवार केसली-इन्दौर ने, प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, मंच उद्घाटन श्री इंजी. भीष्मजी संयमजी परिवार मकरोनिया सागर ने, सिंहद्वार का उद्घाटन सेठ सुदर्शनलालजी बण्डा ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन डॉ. शरद जैन माधुरी जैन परिवार भोपाल ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप के जिनालय का उद्घाटन श्रीमती पुष्पा माताश्री अनूपजी हर्षुलजी वर्षा इण्डस्ट्रीज परिवार सागर ने किया।

दिनांक 21 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शुद्धात्मजी महेशजी भण्डारी भोपाल को मिला। सायंकाल मैनपुरी से आया हुआ 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्रीमती प्रेमबाई जैन दीपक-मन्जू जैन समर्थ श्रेया परिवार इन्दौर ने एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री सुधीरकुमारजी कटनी सुभाष ट्रांसपोर्ट परिवार ने किया।

मूलनायक भगवान शांतिनाथ के भेंट व विराजमानकर्ता श्रीमती जीराबाई नवीनजी कविताजी परिवार इन्दौर थे। इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 13 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। दिनांक 23 दिसम्बर को ज्ञानकल्याणक के दिन **दुनिया की व्यवस्था : छः सामान्य गुण** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित अभयजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, डॉ. संजीवजी गोधा आदि के वक्तव्य का लाभ मिला। अध्यक्षता पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं विशेष उद्बोधन प्रो. ए.डी. शर्मा का हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 1500-2000 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

शिलान्यास संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दादाबाड़ी स्थित सन्मति संस्कार संस्थान के नवीन भवन निर्माण का शिलान्यास दिनांक 14 दिसम्बर को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। समारोह में मुम्बई, सूरत, सागर, दिल्ली, बीना, रतलाम, दाहोद, बड़ौदरा, भीलवाड़ा, बिजौलिया, बारां, पिड़ावा आदि स्थानों के साधर्मियों तथा कोटा समाज ने तन-मन-धन से सहयोग किया। समारोह में कुल 18 शिलान्यास हुये। शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं संस्थान के बालकों द्वारा करवाये गये।

सम्पादकीय –

20

ऐसे क्या पाप किये?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'कृतज्ञता' का अर्थ भी सीधा है। कृत+ज्ञ+ता=अर्थात् किये हुए कार्य का जानपना। कार्योत्पत्ति में कितना किसका सहकार व सहचरपना है – इसका यथार्थ ज्ञान कर लेना ही कृतज्ञता है। तभी निमित्त व उपादान को यथायोग्य आदर दिया जा सकेगा। अन्यथा जो कुछ भी नहीं करते, ऐसे निमित्तों को आवश्यकता से अधिक महत्व मिल जायेगा और जिसने अपना सर्वस्व समर्पण किया–ऐसा उपादान उपेक्षित रह जायगा। जैसा अभी अज्ञानियों द्वारा हो रहा है।

कक्षा में प्रथम स्थान पाने पर यद्यपि छात्र को ही प्रमाण-पत्र व प्रगति के अवसर मिलते हैं; परन्तु योग्य छात्र गुरुजी को सफलता का श्रेय दिये बिना नहीं रहता।

करणानुयोग पढ़कर कुछ व्यक्ति कर्मों को कर्त्ता मानने लगते हैं, जबकि वहाँ केवल निमित्त-नैमित्तिक संबंध का ज्ञान कराया गया है। कर्मों की आड़ में जो व्यक्ति अपना दोष कर्मों के माथे मढ़ना चाहते हैं, उन्हें सावधान करते हुए पण्डित बनारसीदासजी ने नाटक समयसार के सर्व विशुद्धि अधिकार छन्द ६२, ६३ में कहा है –

"कोऊ मूरख यौं कहैं, राग दोष परिणाम।
पुद्गल की जोरावरी, वरतै आतमराम।।
ज्यों-ज्यों पुद्गल बल करै, धरि-धरि कर्मज भेष।
राग दोष की परिणमन, त्यों-त्यों होइ विशेष।।"

अर्थात् कोई मूर्ख ऐसा कहते हैं कि राग-द्वेष के परिणमन पुद्गल कर्म की बलजोरी से होते हैं; किन्तु ऐसी बात नहीं है। इस प्रश्न के समाधान में इसी के आगे कविवर बनारसीदासजी ही लिखते हैं –

"इहि विधि जो विपरीत पख, गहै सद्दहै कोइ।
सो जन राग-विरोध सौं, कबहूँ भिन्न न होइ।।"

अर्थात् इसप्रकार विपरीत अर्थ ग्रहण करने वालों को कभी मोक्ष नहीं होगा तथा उनके कभी राग-द्वेष के नाश का प्रसंग नहीं आयेगा।

पण्डित टोडरमलजी कहते हैं – "आप तो महंत रहना चाहता है और अपना दोष कर्मों पर मढ़ता है सो ऐसी अनीति जिनधर्म में तो संभव नहीं है।"

अरे! जो परद्रव्य की सत्ता से ही इन्कार करते हैं, उन अद्वैतवादियों को सही मार्गदर्शन देने के लिए परद्रव्य (निमित्त) की अनिवार्यता पर जोर दिया है। उस कथन से अज्ञानी निमित्तों के कर्तृत्व का भ्रम पाल लेता है।

जिनवाणी के सूत्रों का सार और प्रयोजन एकमात्र वीतरागता है। तथा 'निमित्तों से कार्य होता है' – ऐसा मानने से निमित्तों पर राग-द्वेष ही होता है अतः सूत्रों के प्रयोजन के विरुद्ध मान्यता होने से भी निमित्तों को कर्त्ता नहीं माना जा सकता।

वस्तु की स्वतंत्रता जैनदर्शन का मौलिक सिद्धान्त है और स्वावलम्बन ही उस स्वतंत्रता की प्राप्ति का उपाय है तथा निमित्तों के अवलम्बन में परावलम्बन है, अतः निमित्ताधीन दृष्टि स्वतंत्रता प्राप्ति का उपाय नहीं हो सकती।

प्रत्येक द्रव्य का अपना स्वायत्त शासन है, उसमें परद्रव्य का अनुशासन नहीं चलता। प्रत्येक द्रव्य की अपनी स्वतंत्र सीमायें और मर्यादायें हैं। उनका अपना-अपना स्वचतुष्टय है, फिर एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कार्य करे ही क्यों और कर भी कैसे सकता है? प्रत्येक द्रव्य पर से असहाय या स्व-सहाय, स्वतंत्र है। नाटक समयसार में आता है –

"सकल वस्तु जग में असहाई, वस्तु सों मिले न कोई।
जीव वस्तु जाने जग जैसी, सोऊ भिन्न रहे सब सेती।।"

इस बात की पुष्टि आचार्य अमृतचन्द के समयसार-कलश से भी होती है वे कहते हैं – "तत्त्वदृष्टि से देखने पर राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाला अन्यद्रव्य किंचित् मात्र भी दिखाई नहीं देता, क्योंकि सर्वद्रव्यों की उत्पत्ति अपने स्वभाव से ही होती हुई अन्तरंग में प्रकाशित होती है।"[१]

कुन्दकुन्दाचार्य ने समयसार में भी यही बात कही है। "अन्य द्रव्य से अन्यद्रव्य के गुणों की उत्पत्ति नहीं की जा सकती; इससे सर्वद्रव्य अपने-अपने स्वभाव से उत्पन्न होते हैं।"[२] इस गाथा की टीका में और भी अधिक स्पष्टरूप से

१. राग द्वेषोत्पादके तत्त्व दृष्ट्या, नान्यद्द्रव्यं वीक्ष्यते किंचनापि।
सर्वद्रव्योत्पत्तिरन्तश्चकास्ति, व्यक्तात्यन्तं स्वस्वभावेन यस्मात्।।२१९।।

२. अण्णदविएण अण्णदवियस्स णो कीरए गुणुप्पाओ।
तम्हा दु सव्वदव्वा उप्पज्जन्ते सहावेण।।३७२।।

कहा है - ''ऐसी शंका नहीं करना चाहिए कि परद्रव्य जीव को रागादि उत्पन्न करते हैं, क्योंकि अन्य द्रव्य के द्वारा अन्य द्रव्य के गुणों को उत्पन्न करने की अयोग्यता है; क्योंकि सर्वद्रव्यों का स्वभाव से ही उत्पाद होता है। इसलिए हम जीव के रागादि का उत्पाद परद्रव्य को नहीं देखते हैं।''

परन्तु निमित्त-नैमित्तिक एक सहज संयोग है। सूर्योदय में चकवा-चकवी का संयोग किसी ने करुणा करके मिलाया नहीं है, रात होती हैं, सब सो जाते हैं। सवेरा होता है, सब जाग जाते हैं। सवेरा किसी को पुकार-पुकार कर जगाता नहीं, रात किसी को सुलाती नहीं है; परन्तु जब कोई पूछता है क्यों सो गये? उत्तर मिलता है रात हो गई। क्यों जाग गये? उत्तर होता है - सवेरा हो गया। ऐसा ही सहज निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। इसीतरह कर्मोदय में जीव स्वयं विभावरूप परिणमता है। टोडरमलजी ने लिखा है कि ''यदि कर्म परिणमावे तो कर्म को चेतनपना भी चाहिए और बलवानपना भी चाहिए।''

निमित्तों को कर्त्ता मानने से हानि ही हानि है। स्वयंकृत चोरी का दोष चन्द्रमा पर मढ़कर ''यदि चाँदनी न होती तो मैं ताला तोड़ता ही कैसे?'' कोई चोर दण्डमुक्त नहीं हो सकता। वैसे ही आत्मा भी अपने द्वारा कृत मोह-राग-द्वेष भावों का कर्तृत्व कर्मों पर थोपकर दुःखमुक्त नहीं हो सकता, किन्तु निमित्ताधीन दृष्टिवालों की वृत्ति स्व-दोष दर्शन की ओर नहीं जाती। वे आत्म निरीक्षण नहीं करते।

निमित्तों के कर्तृत्व के निषेध पक्ष में निम्नलिखित आगम के उदाहरण भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं :-

(१) नरकों में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में वेदना, जातिस्मरणादि को निमित्त कहा है, सो वेदना तो सभी को हर समय है, सदा सबको सम्यग्दर्शन क्यों नहीं होता?

(२) क्षायिक सम्यक्त्व केवली के पादमूल में होता है तो समवसरण में स्थित सभी जीवों को क्षायिक सम्यक्त्व हो जाना चाहिए, परन्तु होता नहीं - इसका क्या कारण है?

(३) मक्खन गोशाल ६६ दिन तक भगवान महावीर के समवसरण में बैठा-बैठा क्यों चला गया? और गृहीत मिथ्यादृष्टि होकर मस्करी मत का प्रचारक कैसे बन गया?

(४) शील के प्रभाव से सीताजी की अग्निपरीक्षा में अग्नि का जल हो गया और १८ हजार प्रकार से शील का पालन करने वाले भावलिंगी सन्त पाँचों पाण्डवों के अग्निमय लोह आभूषण ठंडे क्यों नहीं हुए? **(क्रमशः)**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2019

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 25 जनवरी 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
शनिवार 26 जनवरी 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
रविवार 27 जनवरी 2019	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- नीशू शास्त्री, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड

श्री 1008 अभिनन्दननाथ एवं धर्मनाथ तीर्थंकर के ज्ञानकल्याणक तथा पौष दशलक्षण महापर्व के पावन प्रसंग पर कोल्हापुर जिले के 'हेरले' नगर में अध्यात्मयुगप्रवर्तक मोक्षमार्गदर्शक आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की वीतराग मंगल धर्मप्रभावना में स्थापित सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, हेरले सर्वोदय फाउण्डेशन, कोल्हापुर एवं दक्षिण प्रान्तीय मुमुक्षु मण्डल द्वारा आयोजित

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

बुधवार, दिनांक 16 जनवरी से सोमवार, 21 जनवरी, 2019 तक

कार्यक्रम स्थल :- शौरीपुर नगरी, सांगली-कोल्हापुर हाइवे, हेरले, जिला- कोल्हापुर (महा.)

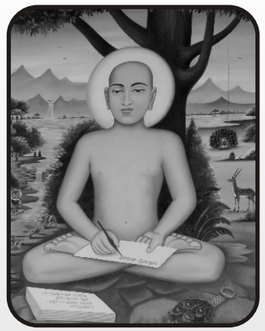

श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव

हार्दिक

तीन चौबीसी जिनमंदिर

आमंत्रण

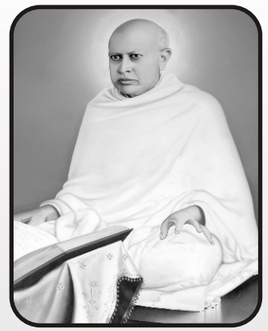

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति समर्पित मोक्षमार्गोपासक साधर्मीजन,

सादर जय–जिनेन्द्र एवं शुद्धात्मवंदन।

अहो भाग्य हर्षानन्दपूर्वक आप सबको महामांगलिक संदेश दे रहे हैं कि परमभट्टारक देवाधिदेव भगवान श्री महावीर स्वामी की परम्परा में हुए प्रात:स्मरणीय परमपूज्य श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव के पंचपरमागमों के रहस्योद्घाटक आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से प्रभावित होकर सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट हेरले, सर्वोदय फाउण्डेशन कोल्हापुर तथा देश–विदेश के मुमुक्षु एवं साधर्मी जैन भाई–बहनों के सहयोग से महाराष्ट्र–कर्नाटक की सीमा पर स्थित कोल्हापुर तथा ऐतिहासिक धार्मिक तीर्थधाम कुम्भोज–बाहुबली के समीप हेरले नगर की पुण्य वसुन्धरा पर भूत, वर्तमान एवं भविष्य की तीन चौबीसी दिगम्बर जैन मन्दिर का विशाल रूप में निर्माण हो चुका है, जिसका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव **ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री** के प्रतिष्ठाचार्यत्व में एवं **पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर** के निर्देशन में बुधवार, दिनांक 16 जनवरी से सोमवार, 21 जनवरी, 2019 तक अनेक विशेषताओं सहित होने जा रहा है।

इस भव्य महोत्सव में नर से नारायण, पतित से पावन एवं आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का विधान दर्शाया जायेगा। अध्यात्म–सिद्धांत एवं भक्ति के अनुपम संगम में चैतन्य की मधुर धुनों के साथ आत्मशान्ति के लिये यह मंगल महोत्सव सौभाग्य से जीवन में प्राप्त हो रहा है।

अत: आप सभी आबाल-गोपाल के साथ इस मंगल महोत्सव में परिवार सहित आमंत्रित हैं।

निवेदक	**श्री बसन्तभाई एम. दोशी मुम्बई** अध्यक्ष	**श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर** महामंत्री	**श्री सुरेन्द्रजी पाटील माणकापुर** कार्याध्यक्ष
संयोजक	**श्री शीतल श्रीधर शेट्टी अ.लाट** 9270074299	**डॉ. किरण शहा पुणे** 9822063615	**श्री महावीर पाटील सांगली** 9422406931

–: आयोजक : –

श्री बाळासाहेब वसवाडे (महामंत्री) **व सर्व ट्रस्टी, सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, हेरले**

–: सौजन्य :–

महावीर पाटील शास्त्री, जैन मार्बल, 100 फुटी रोड, गुलाब कॉलोनी, सांगली

विद्वत्सान्निध्य

- **तत्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर**
- **बा.ब्र.यशपालजी जैन, जयपुर**
- **डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर**
- **पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर**
- **पण्डित शैलेषभाई, तलोद**
- **पण्डित नीलेशजी शाह, मुम्बई**
- **पण्डित अनिलजी शास्त्री, भिण्ड**
- **पण्डित देवेन्द्रजी, बिजौलिया**
- **विदुषी धवलश्री पाटील, बेलगांव**
- **दक्षिण प्रान्तीय सर्व स्थानिक व क्षेत्रीय विद्वान**

भगवान नेमिनाथ का तत्त्वोपदेश

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(दोहा)

सौ इन्द्रों की हाजिरी, अर गणधर निर्ग्रन्थ।
नेमीश्वर समझा रहे, निश्चय मुक्तिपंथ।। १।।

(रोला)

निश्चय मुक्ति पंथ कहा निश्चय रत्नत्रय।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित निश्चय रत्नत्रय।।
निश्चय मुक्तिपंथ आतमा के आश्रय से।
प्रगटे जिनवर कहें सभा में भव्यजनों से।।२।।

परमशुद्ध निश्चयनय का है विषयभूत जो।
उस आतम में अपनापन है सम्यग्दर्शन।।
और उसे निजरूप जानना ज्ञान कहा है।
तथा उसी में जमना-रमना ध्यान[१] कहा है।। ३।।

सम्यग्दर्शन सहित ज्ञान अर ध्यान धरम है।
शुद्धातम का ध्यान धरम का परम मरम है।।
अरे ध्यान के पहले उसका ज्ञान जरूरी।
और ज्ञान के साथ विमल श्रद्धान जरूरी।। ४।।

अरे ज्ञान-श्रद्धान बिना न ध्यान कभी हो।
ज्ञान ध्यान श्रद्धा बिन न कल्याण कभी हो।।
यदि करना कल्याण आतमा का हे भाई !
ज्ञान ध्यान श्रद्धान करो आतम का भाई।। ५।।

ज्ञान ध्यान श्रद्धान आत्मा के आश्रय से।
होते हैं तो निज आतम पहिचान करो तुम।।
जिन आगम के आश्रय से अर सदुपदेश से।
करो प्रमाणित उसे आत्मा के अनुभव से।। ६।।

तनरूपी मन्दिर में है भगवान आतमा।
तन जड़ है पर चेतन है भगवान आतमा।।
यद्यपि वे हैं एकक्षेत्र अवगाही किन्तु।
फिर भी वे हैं पृथक्-पृथक् -जिन ऐसा कहते।। ७।।

१. चारित्र का उत्कृष्ट रूप आत्मध्यान ही है।

रे परमातम देव विराजे मन मन्दिर में।
एवं आतमदेव विराजे तन मन्दिर में।।
मन मन्दिर के देव सातिशय पुण्य बंधावें।
तन मन्दिर के देव हमें शिवपुर पहुँचावें।। ८।।

मन मन्दिर के देव परमप्रिय परमातम हैं।
तन मन्दिर का देव हमारा निज आतम है।।
परमातम के चरणों में अति भक्तिभाव से।
करता हूँ मैं सत् श्रद्धा के सुमन समर्पित।। ९।।

अपने में अपनेपन की महिमा अद्भुत है।
अपने में अपनापन करता हूँ मैं अर्पित।।
अधिक कहूँ क्या हे परमातम निज आतम में।
अपनेपन से हो जाता हूँ स्वयं समर्पित।। १०।।

स्व-पर भेदविज्ञान धर्म का मूल तत्त्व है।
इसे प्राप्त कर भव्यजीव निज आतम पाते।।
निज आतम में अपनापन स्थापित कर वे।
निज आतम के ज्ञान-ध्यान में थिर हो जाते।। ११।।

बाँटो तुम दो भागों में सारी दुनियां को।
छाँटो फिर अपना आतम जो ज्ञानस्वभावी।।
ज्ञानतत्त्व अर ज्ञेयतत्त्व दो रूप जगत है।
ज्ञानस्वभावी आतम बाकी ज्ञेयतत्त्व हैं।। १२।।

ज्ञान ज्ञेय - दोनों बातें हैं आत्मतत्त्व में।
सभी अनातम भाव अकेले ज्ञेय भाव हैं।।
पर ज्ञेयों से भिन्न आतमा ज्ञानस्वभावी।
परम तत्त्व निज आतम ज्ञानानन्द स्वभावी।। १३।।

अरे देह में रहकर भी यह देह नहीं हैं।
यद्यपि इसमें राग किन्तु यह राग नहीं है।।
पर्यायों से पार आतमा ज्ञान पिण्ड है।
गुणभेदों से भिन्न प्रभु अति ही प्रचण्ड है।। १४।।

अरे ज्ञानघनपिण्ड आतमा निर्विकल्प है।
आनन्द का रसकन्द आतमा निर्विकल्प है।।
निर्विकल्प यह जीव विकल्पों में नहीं आता।
आतम अनुभवगम्य अतः अनुभव में आता।। १५।।

करो भावना अरे निरन्तर भेदज्ञान की।
भेदज्ञान की महिमा में नित चित्त लगाओ।।
अविरल धारा बहे ज्ञान में भेदज्ञान की।
भव्य भावना रहे ध्यान में भेदज्ञान की।। १६।।

भेदज्ञान के इस अविरल धारा प्रवाह से।
कैसे भी कर प्राप्त करे जो शुद्धातम को।।
और निरन्तर उसमें ही थिर होता जावे।
पर परिणति को त्याग निरंतर शुध हो जावे।। १७।।

भेदज्ञान की शक्ति से निजमहिमा रत को।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि निश्चित हो जावे।।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि होने पर उसके।
अतिशीघ्र ही सब कर्मों का क्षय हो जावे।। १८।।

आत्मतत्त्व की उपलब्धि हो भेदज्ञान से।
आत्मतत्त्व की उपलब्धि से संवर होता।।
इसीलिए तो सच्चे दिल से नितप्रति करना।
अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।। १९।।

अरे भव्यजन! भव्यभावना भेदज्ञान की।
सच्चे मन से बिन विराम के तब तक भाना।।
जब तक पर से हो विरक्त यह ज्ञान ज्ञान में।
ही थिर न हो जाय अधिक क्याकहें जिनेश्वर।। २०।।

अब तक जो भी हुए सिद्ध या आगे होंगे।
महिमा जानो एक मात्र सब भेदज्ञान की।।
और जीव जो भटक रहे हैं भवसागर में।
भेदज्ञान के ही अभाव से भटक रहे हैं।। २१।।

भेदज्ञान से शुद्धतत्त्व की उपलब्धि हो।
शुद्धतत्त्व की उपलब्धि से रागनाश हो।।
रागनाश से कर्मनाश अर कर्मनाश से।
ज्ञान ज्ञान में थिर होकर शाश्वत हो जावे।। २२।।

मुक्तिमार्ग यह बतलाया अरहंत देव ने।
यह उपलब्ध सदा हमको है जिनवाणी में।।
गहराई से पढ़े मनन चिन्तन कर समझें।
समझ न आवे तो ज्ञानी गुरुओं से समझें।। २३।।

मुक्तिमार्ग के नेता ज्ञाता विश्व तत्त्व के।
वस्तु का स्वरूप समझाते दिव्यध्वनि से।।
हित उपदेशक अनेकान्त के स्याद्वाद के।
परम वीतरागी होते अरहंतदेव हैं।। २४।।

अनेकान्तमय सप्ततत्त्व की प्रतिपादक अर।
वीतरागता की पोषक जो जिनवर वाणी।।
परम अहिंसक सदाचार की भी पोषक जो।
अरिहंतों की दिव्यध्वनि वह जिनवाणी है।। २५।।

हर अन्तमुर्हुर्त्त में जो अन्तर्मुख होते।
महा तपस्वी परम अहिंसक महाव्रती जो।।
नय-प्रमाण के विशेषज्ञ हैं शान्त चित्त हैं।
ऐसे अद्भुत नग्नदिगम्बर जैन गुरु हैं।। २६।।

ऐसे देव-शास्त्र-गुरु एवं नव तत्त्वों के।
श्रद्धानी श्रावक होते हैं सम्यग्दृष्टि।।
यह व्यवहार कथन है लेकिन निश्चय से तो।
आतम के अनुभवी जीव हैं सम्यग्दृष्टि।। २७।।

देहादिक परद्रव्यों में अपनापन जिनके।
रागादि विकार भावों में भी अपनापन।।
पर्यायों में रमे रहें अपनापन करके।
मिथ्यादृष्टि जीव डूबते भवसागर में।। २७।।

(वैराग्य महाकाव्य के सत्रहवें अध्याय से साभार)

आवश्यकता

आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन, दिल्ली हेतु एक अधीक्षिका की आवश्यकता है, जिसे धार्मिक ज्ञान में चारों अनुयोगों का आधारभूत ज्ञान हो, धार्मिक गतिविधियों में सहयोग कर सके। वेतन योग्यतानुसार।
संपर्क सूत्र :- 767841813, 7082040290

बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने-बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है, परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।...

- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 238

श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान

नई दिल्ली : यहाँ दिनांक 17 दिसम्बर को विज्ञान भवन में आयोजित वार्षिक समारोह में दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग, दिल्ली सरकार द्वारा विलक्षण योगदान के लिये श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के जैनदर्शन विभाग के दो प्रोफेसर्स डॉ. वीरसागरजी शास्त्री एवं डॉ. अनेकांतजी जैन को श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। दोनों विद्वान दिल्ली में जैनदर्शन के गूढतम रहस्यों को समझाने तथा पढाने में अपना अमूल्य योगदान देने के साथ-साथ अनेक ग्रंथों, शोधपत्रों तथा लेखों का लेखन व सम्पादन करके जैनदर्शन के संरक्षण और संवर्धन का कार्य भी कर रहे हैं।

हार्दिक बधाई !

पौद्दार इन्स्टीट्यूट जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 20 दिसम्बर को आयोजित राज्यस्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्र प्रजल जैन (शास्त्री द्वितीयवर्ष) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

शोक समाचार

प्रतापगढ (राज.) निवासी श्री कन्हैयालालजी नरसिंगपुरा का दिनांक 13 नवम्बर को 77 वर्ष की आयु में समताभावपूर्वक समाधिमरण हुआ। विगत 1 वर्ष से बीमार रहने पर भी तत्त्व की पकड़ एवं दृढता अद्भुत थी; स्थानीय विद्वान पण्डित सुनीलजी शास्त्री द्वारा प्रतिदिन स्वाध्याय एवं समताभाव पूर्वक देहपरिवर्तन की प्रेरणा मिली। आपकी स्मृति में 2500/- रुपये संस्था हेतु प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 दिस.से 1 जनवरी	जयपुर	विदेशियों हेतु शिविर
16 से 21 जनवरी	हेरले	पंचकल्याणक
22 से 24 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा

सातवाँ वार्षिक महोत्सव

दिनांक 22 फरवरी से 24 फरवरी 2019 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का सातवाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 24 फरवरी 2019 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा।

इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल अवसर पर पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com